E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

स्वामी विवेकानंद के दर्शन का मानव जीवन पर प्रभाव

अंजली कुशवाहा
शोध छात्रा राजनीति विज्ञान
जीवाजी विश्वविद्यालय
ग्वालियर (म. प्र.)
डॉ. ज्योति कुशवाह
प्रोफेसर,राजनीति विज्ञान विभाग
महाराजा मानसिंह महाविद्यालय
(म.प्र.)

Paper Rcevied date

05/11/2025

Paper date Publishing Date

10/11/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.17955499

IMPACT FACTOR
5.924

शोध सार

मनुष्य को सर्वोपरि बल विचार-शक्ति से प्राप्त होता है, जितना ही सूक्ष्मतर तत्त्व होता है, उतना ही अधिक वह शक्तिसम्पन्न होता है। विचार की मूक शक्ति दूरस्थ व्यक्तियों को भी प्रभावित करती है, क्योंकि मन एक भी है और अनेक भी। विश्व एक जाल है और मानव-मन मकड़ियों की तरह विभिन्न अवधारणाओं में फसा हुआ है।

यह विश्व एक विश्वव्यापी सत्ता का गोचर रूप है । इन्द्रियगोचर वह विश्वनियन्ता ही तो हमारा विश्व है। यही माया है । यों तो यह संसार भ्रम है, सत् की अपूर्ण झाँकी, एक अर्द्ध उद्भास, जैसे प्रातः सूर्य एक लाल गोला दिखायी देता है। इस प्रकार सभी अशुभ और दुष्प्रवृत्तियाँ दुर्बलता मात्र है, शिव की अपूर्ण झांकी है। निरन्तर विक्षेप किये जाने पर सरल रेखा एक वृत्त बन जाती है। शिव की खोज स्वयं अपने में ही वापस ले आती है । मैं स्वयं सम्पूर्ण रहस्य, ब्रह्म हूँ। मैं एक शरीर भी हूँ, निम्नतर अहम और में विश्व का प्रभु भी हूँ। मनुष्य को नैतिक और शुद्ध क्यों होना चाहिए ? क्योंकि इससे उसकी संकल्प - शक्ति बलवती होती है। वह सब, जो मनुष्य की सत् प्रकृति को उद्भा-सित करते हुए उसकी संकल्प-शक्ति को सबल बनाये, नैतिक है और वह सब, जो इसके विपरीत करे, अनैतिक है। मानदंड देश और व्यक्ति व्यक्ति के लिए पृथक् पृथक् है । मनुष्य को कानूनों एवं शब्दों आदि की दासता की स्थिति से अपने को मुक्त करना ही चाहिए। आज हममें संकल्प की स्वाधीनता भी नहीं है; पर जब हम स्वाधीन होंगे, तब होगी। इस संसार को त्याग देना ही संन्यास है, त्याग है ।

मुख्य बिन्दु :- शक्तिसम्पन्न, सूक्ष्मतर, दुष्प्रवृत्तियाँ, संकल्प-शक्ति, स्वाधीनता।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

स्वामी विवेकानंद मानव धर्म को सर्वश्रेष्ठ धर्म मानते थे, धर्म के संदर्भ में उनके विचार अत्यंत आकर्षक एवं हृदयस्पर्शी थे। उनके अनुसार धर्म मनुष्य के चिंतन और जीवन का सबसे उच्च स्तर है। हम देखते है कि मानव प्रेम एवं धर्म जगत में इन दो ही शक्तियों की क्रिया सबसे अधिक प्रस्फुट हुई है। मानवता को जिस तीव्रतम प्रेम का ज्ञान है, वह धर्म से ही प्राप्त हुआ है, और वह घोरतम पैशाचिक घृणा भी, जिसे मानवता ने कभी अनुभव किया, वह भी धर्म से ही प्राप्त हुई है।

संसार ने कभी महानतम् शांति की जो वाणी सुनी है, वह धर्म राज्य के लोगों के मुख से निकली हुई है और जगत ने कभी भी जो तीव्रतम भर्त्सना सुनी है, वह भी धर्म राज्य के मनुष्यों के मुख से उच्चरित हुई है । (1) किसी धर्म का उद्धेश्य जितना ही उच्च होता है, उसका संगठन जितना ही सूक्ष्म होता है, उसकी क्रियाशीलता भी उतनी ही अद्भूत होती है। धर्म प्रेरणा से मनुष्यों ने संसार में जो खून की नदियाँ बहायी है, मनुष्य के हृदय की और किसी प्रेरणा ने वैसा नही किया । और धर्म प्रेरणा से मनुष्यों ने जितना चिकित्सालय, धर्मशाला, अन्न क्षेत्र आदि बनाये उतने और किसी प्ररेणा से नहीं ।

मनुष्य हृदय की और कोई वृत्ति उसे, सारी मानव जाति की ही नही निकृष्टतम प्राणियों तक की सेवा करने को प्रवृत्त करती । धर्म प्रेरणा से मनुष्य जितना निष्ठुर हो जाता है, उतना और किसी प्रेरणा से नही, उसी प्रकार, धर्म प्रेरणा से मनुष्य जितना नम्र हो जाता है उतना किसी और प्रवृत्ति से नही ।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार भारतवासियों को ऐसे धर्म की आवश्यकता नही है जो कमजोरी पैदा करें। उनका मानना था कि इस संसार में नायात्मा अर्थात कमजोर को इस संसार में कुछ भी प्राप्त नही होता। इस प्रकार स्वामी जी ने भारतीयों को अभयम् व शक्तिशाली बनने का सुझाव दिया । (2)

स्वामी जी धर्म को मानव शक्ति का स्रोत मानते थे । वे ऐस धर्म को नही मानते थे जो कायरता सिखाता हो। उनका कहना था कि स्वयं अपने में विश्वास रखो । स्वामी जी ने भारतीयों को उद्बोधित करते हुए कहा है कि यह समय न तो रोने का है और न खुशियाँ बनाने का है। यह समय कमजोरी दिखाने का भी नही है । यह कमजोरी इस हद तक हो गई है हम रूई के ढेर की तरह कमजोर हो गए है। आज हमारे देश को लौह पुरूषों तथा दृढ़ इच्छाशक्ति के लोगों की आवश्यकता है जिन्हें अपने लक्ष्य प्राप्ति से कोई रोक न सकें। चाहे इन्हें उसके लिए समुद्र की सतह में क्यों न जाना पड़े अथवा मृत्यु का सामना क्यों न करना पड़े ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

स्वामी विवेकानंद का मानना था कि प्रत्येक धर्म के मूल तत्व समान है। हिन्दू वैदिक धर्म विवेकानंद के अनुसार नैतिक मानववाद तथा आध्यात्मिक आदर्शवाद के सार्वभौमिक तत्वों का संदेश देता है। प्राचीन हिन्दू वैदिक धर्म के अन्तर्गत मानवता के कल्याण के लिए जो नैतिक तथा आध्यात्मिक समादेश दिए गए है जिनका स्वरूप सार्वभौमिक है । (3)

स्वामी विवेकानंद का धर्म सर्व धर्म है, वे किसी एक धर्म के पक्षधर नही थे बल्कि प्रत्येक धर्म के मूल, सारत्व मानव कल्याणकारी अनिवार्य उपयोगिता जो मानव को सच्चे धार्मिकता प्रदान करते है। सार्वभौमिक धर्म के संदर्भ में उनका कहना था कि धर्म की सार्वभौमता धर्म का सार है।

सार्वमौम धर्म की सार्वभौमता मूलतः दो अनवार्य लक्षणों पर आधारित होती है- एक बात तो यह कि धर्म सार्वभौम तभी हो सकता है जब इसका द्वार सबके के लिए खुला रहे। दूसरी बात ऐसे सार्वभौम धर्म में यह शक्ति होनी चाहिए कि वह विभिन्न धार्मिक संस्थाओं को संतुष्ट एवं तृप्त कर सके । सार्वभौम धर्म किसी धर्म की उपेक्षा ना करके आपसी मतभेदों और विवादों से ऊपर उठकर विभिन्न धर्म संस्थाओं को भी सार या सार्थकता दिखाई दे ।

धर्म को यह बात देखनी है कि नवजात शिशु अबोध तथा निर्दोष है, वह किसी धर्म के साथ पैदा नही होता, मानव जीवन में सामान्यतः हम देखते है कि हिन्दू माँ - बाप का बच्चा हिन्दू धर्म को स्वीकारता है तथा मुस्लिम माँ - बाप का बच्चा इस्लाम को ही स्वीकारता है। (4) ऐसा इसलिए होता है कि बचपन से ही उसकी शिक्षा-दीक्षा उसके सामाजिक जीवन, उनका परिवेश उसे एक विशेष धर्म की ओर उन्मुख कर देता है । किन्तु धर्म में यह नही कहा जाता है कि बच्चा किसी धर्म को लेकर पैदा होता है। यह तो बाद में उसकी अभिरूची एवं मनोवृत्ति पर निर्भर करता है कि वह किस धर्म को स्वीकार करें।

धर्म का चयन तो व्यक्ति के अपने स्वतंत्र निर्णय पर आधृत है। अतः धर्मो की सार्वभौमता की एक पहचान यह है, कि उसके द्वार हर धर्म के व्यक्ति के लिए खुले रहे। हर धर्म व्यक्ति के लिए खुल जाने से यह सार्वभौम धर्म कहलाता है। स्वामी जी कहते है कि जिस प्रकार, विश्व बंधुत्व के संबंध के कहा जा सकता है विश्व बंधुत्व वास्तविक है ठीक उसी प्रकार सार्वभौम धर्म के संबंध में कहा जा सकता है कि सार्वभौम धर्म भी वास्तविक है । स्वामी विवेकानंद धर्म को सार्वभौम धर्म कहते है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

धर्म को वे मानव जाति को एकता के सूत्र में बांधने वाली शक्ति के रूप में मानते थे । स्वामी विवेकानंद का चिंतन केवल एक देश या एक धर्म विशेष तक सीमित नही था बल्कि उसकी सरहरी (सीमा में) में संपूर्ण विश्व का मनुष्य समाज समाया हुआ था। वे वृहत्तर संसार के भातृत्व में भी सभी धर्मो की सार्थकता मानते थे। अपने इस विश्व दृष्टि के कारण विवेकानंद यह मानते थे ।

भारत की प्रगति समूचे विश्व की प्रगति से संबंद्ध है। स्वामी जी का कहना था कि हमें ऐसा धर्म चाहिए जो मनुष्य का निर्माण करने वाला हो उन्हें कमजोर नही बल्कि सबल बनाने वाला होना चाहिए। उन्होंनें सर्वश्रेष्ठ और उचा धर्म मानव की सेवा को माना इस संबंध मे उनका विश्व विख्यात प्रिय नारा मानव की सेवा करना ईश्वर की सेवा और आराधना करना है। गरीबों की सेवा ही ईश्वर सेवा है । (5)

ईश्वर या देवता की दिव्यता कोई नई और बड़ी बात नही है, बड़ी बात तो तब है जब मानव में भी दिव्यता हो । स्वामी विवेकानंद सार्वभौम धर्म के द्वारा राष्ट्रीय एकता को सशक्त करना चाहते थे। अतः आज हमें स्वामी जी के विचारों का गहराई से चिंतन मनन करने की आवश्कता है, जिससे हममें से प्रत्येक में सत्य, आत्मा की विशुद्धता निष्कपट तथा दैवीय प्रकृति से युक्त गुणों का विकास कर नव मानव का निर्माण करना आवश्यक है ।

स्वामी विवेकानंद का विचार, दर्शन और शिक्षा अत्यंत उच्चकोटि की है जीवन के मूल सत्यों, रहस्यों और तथ्यों को समझने की कुंजी है। उनके शब्द इतने असरदार है कि एक मुर्दे में भी जान फूँक सकता है। वे मानवता के सच्चे प्रतीक थे, और मानव जाति के अस्तित्व को जनसाधारण के पास पहुँचाने का अभूतपूर्व कार्य किया। वे अद्वैत वेदांत के प्रबल समर्थक थे। भारतीय संस्कृति एवं उनके मूल मान्यताओं पर दर्शन आधारित जीवन शैली अपनाने तथा आपनी संस्कृति को जीवित रखने हेतु भारतीय संस्कृति के मूल अस्तित्व को बनाए रखने का आह्वान किया ताकि आने वाली भावी पीढ़ी पूर्ण संस्कारिक, नैतिक गुणों से युक्त, न्यायप्रिय, सत्यधर्मी तथा आध्यात्मिक और भारतीय आदर्श के सच्चे प्रतीक के रूप में विश्व में उँचा स्थान रखें। वर्तमान में आज के युवा पीढ़ी के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने मूल संस्कृति से परिचित होवे और नैतिक गुणों से भरपूर होकर सच्चे भारतीय होने के गौरव को बनाए रखें।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

आधुनिकता और पाश्चात्य संस्कृति और जीवन शैली के आडम्बर में न फंसकर थोडें दिनों के सुख के लिए बहुमूल्य जीवन का नाश न करें। स्वामी जी के आदर्शो पर चलने हेतु दृढ़ प्रतिज्ञ रहें और शिक्षा के मूल्य को समझे गुरु को उचित आदर सम्मान दें, भौतिकता के अंधे दौड़ में मौलिकता का त्याग न करें। शिक्षा जैसी पवित्र प्रकाश जो अज्ञानता के बंधन से मुक्ति दिलाती है और जीवन के दुःखों से छुड़ाकर सुखमय ज्योतिर्मय जीवन प्रदान करती है। गुरू-शिष्य के पवित्र रिश्तों को कलंकित न करें ।

नैतिक आदर्शो पर चलने हेतु दृढ़ संकल्पित हो ताकि विश्व के भूपटल पर भारतीय होने के गौरव का छाप सुनहरें अक्षरों में सदैव अंकित रहें। धर्म के संबंध में जो स्वामी जी ने हमें मार्ग बताया उन पर अमल करें और साम्प्रदायिकता, धार्मिक कट्टरता, घृणा, भेदभाव, जात-पात, छुआ-छूत जैसी संकीर्ण मानसिकता व विचारों से उपर उठकर धार्मिक सहिष्णुता को हृदय में जगह दें। ईश्वर एक है और हम सब उसी के संतान है इसलिए मानवता की सेवा को व मानव प्रेम को दिल में पहला स्थान दें। यह सब तभी संभव होगा जब हम सचमुच स्वामी विवेकानंद के बताये हुए मार्ग पर चलेंगे ।

स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्व और आदर्शो पर चिंतन करें सत्य को समझने की कोशिश करेंगे। खुद को सर्वश्रेष्ठ समझकर या अधिक बुद्धिमान जानकर स्वयं को धोखे में न रखें बल्कि वर्तमान में हम किस रास्ते में जा रहें हैं जिसका परिणाम क्या होगा ? विचार करें। स्वामी जी के कार्यो को स्मरण करें और अपनी मातृभूमि माँ भारती के खोई हुई गौरव को समस्त भारतवासी मिलकर और दृढ़ संकल्प लेकर वापस लाने का प्रयास करें। यही स्वामी जी को सच्ची श्रद्धाजंली होगी और माँ भारती के प्रति सच्चा समर्पण | संस्कृति देश की धरोहर व पहचान है शिक्षा ज्योंति है।

धर्म मानव होने का प्रतीक है । इसालिए संस्कारिक चरित्रवान उत्तम गुणों से अपने को सजायें । शिक्षा के द्वारा देश के विकास को चरम पर ले जावें। और सर्व धर्म के द्वारा सच्चे मानवता को अपनाकर ईश्वर की सेवा करें। तो आइए हम एक होकर राष्ट्रीय नवचेतना जगाएं, नए समाज एवं नवयुग, का निमार्ण करें।

संदर्भ सूची

1. दमोदरन के भारतीय चिंतन परंपरा संस्करण 1982 पृ. 16. 2. लाल, बंसत कुमार समकालीन भारतीय दर्शन प्रकाशक मोतीलाल बनारसी दास बंगलों रोड जवाहर नगर दिल्ली 1991 पृ. 32.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

3. **श्रीमति बाधवा, रिसर्च एनालिसिस एण्ड एवैल्युएशन संपादक कृष्ण वीर सिंह मोतीलाल नगर रोड़ जयपुर** 2010 **पृ**. 38.

4. **स्वामी विवेकानंद नया भारत गढ़ो रामकृषण मठ नागपुर** 1880 **पृ**.71.

5. **वहीं, पृ**. 26.